Impact Factor - 8.572 (SJIF)
ISSN - 2278 -9308

MARCH 2022
ISSUE NO. (CCCXXXVI) 336

B.Aadhar

Peer - Reviewed & Refereed Indexed

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

SOCIAL JUSTICE AND COMMUNAL HARMONY

IN SOUTH ASIA DURING THE LAST FIVE DECADES

Editors

Dr. Nilima Sarap
Dr. Piyush Nalhe
Dr. Arun Shelke
Asst. Prof. Dimple Mapari

This Journal is Indexed in

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit to : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

40	भारतीय संविधानातील कलम-370-एक दृष्टिक्षेप **प्रा. अमोल भाऊरावजी बंड**	**153**
41	धार्मिक असहिष्णुतेचे कारणे व परिणाम **प्रा.अभय डी. जायभाये**	**157**
42	महिलांचे शोषण व मानवी अधिकार **प्रा.डॉ. संतोष सदाशिव मिसाळ**	**160**
43	सामाजिक असहिष्णुतेचे अध्ययनाचे दृष्टिकोन **प्रा.डॉ.मेघराज रा.शिंदे**	**162**
44	मुस्लीम स्त्रीप्रश्नाच्या आकलनाची दिशा **प्रा.संजयकुमार कांबळे**	**166**
45	अर्थशास्त्र आणि सामाजिक न्याय **प्रा. जया जोशी (सहस्त्रबुद्धे)**	**175**
46	अर्थशात्र व सामाजिक न्याय **संदेश सूर्यभान गवारगुरू**	**183**
47	महिला : प्रजनन आरोग्य आणि आरोग्यसेवा मिळण्यातील आढतळे **स्नेहा झुंजरुटे**	**187**
48	महिला सक्षमीकरणाच्या विविध शासकीय योजना—एक दृष्टिक्षेप **डॉ. बळीराम परशराम अवचार**	**192**
49	महिला सक्षमीकरण एक दृष्टीक्षेप **डॉ. गणेश ए. पोटे**	**197**
50	लैंगिक असमानता और सामाजिक विक्षोभ भारत **एस. हरियाले**	**201**
51	अकोला जिल्ह्यातील पर्यटन : एक भौगोलिक अभ्यास **प्रा. अभिजीत प्र. दोड**	**206**
52	भारतीय संविधान व मानवाधिकार **प्रा. निता पांडे (पाठक)**	**212**
53	मानवाधिकार व भारतीय संविधान या मधील संबध एक चिकीत्सक अध्ययन **प्रा.डॉ.प्रशात वामनराव खेडकर**	**215**
54	जातीय असहनशिलतेच्या संकल्पणेचे समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ.पुरूषोत्तम आर.बांडे**	**221**
55	भारतीय संविधान और मानवाधिकार **सौ. रूपाली अग्रवाल**	**226**
56	महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळातील महीला वाहकांच्या समस्या **कु.वर्षा काशीराम रोठे**	**231**
57	भटक्या विमुक्त वासुदेव जमातीचे धार्मिक सद्भाव **डॉ. श्रीकृष्ण काकडे /उज्वला समाधान डांगे**	**236**
58	शंकरलालजी (काकाजी) खंडेलवाल का सामाजीक कल्याण कार्यों का अद्ययन **निशीकांत दत्तात्रय देशपांडे**	**241**
59	भारतीय संविधान आणि मानवाधिकार **प्रा .डॉ. दिलीप ह. सूर्यवंशी**	**245**
60	स्त्री पुरुष समानतेचे बदलते आयाम : चिकित्सक विश्लेषण **श्री.राजेश शरदराव चव्हाण**	**248**

शंकरलालजी (काकाजी) खंडेलवाल का सामाजीक कल्याण कार्यों का अद्ययन

निशीकांत दत्तात्रय देशपांडे

संशोधक छात्र, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट, म.प्र.

E-mail Address- nishikantddeshpande@gmail.com , Mobile no.-9850342404

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से ओतप्रोत आधुनिक समय के एक ऐसे व्यक्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन हैं जिनके व्यक्तित्व के गुणों खोज कर निस्वार्थ समाजसेवी होने के साथ परिवार के सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुए परिवार (अपने वंशजो) को पीढ़ी-दर-पीढ़ी उच्च भारतीय संस्कृती आदर्शो एवं समाज कल्याण एवं मानवता वादी दृष्टिकोण की श्रृखंला में बांधने की परिपाटी का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण शोध-पत्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है जिन्होने वर्तमान में शंकरलाल जी खण्डेलवाल उपारव्य काकाजी (आगे शोध पत्र में जिन्हे काकाजी के नाम से सम्बोधित किया जावेगा) द्वारा प्रज्जलित की गई दिव्य ज्योति (समाज कल्याण के अभूतपूर्व कार्य) को अखण्ड ज्योति बनाये रखना अपने जीवन का मुख्य सक्ष्य बना लिय है इस शोधपत्र के माध्यम से काकाजी के जीवन से जुडे असंख्य प्रेरक प्रंसको में से केवल समाज कल्याण के लिए किये गए अपूर्व कार्यो का संक्षिपत अध्ययन करना ही मर्योदित शोध पत्र का विषय है।

बीज शब्द

समाज कल्याण, नि:स्वार्थ सेवा, योगदान, समर्पण, कार्य

परिचय

वसुधैव कुटुम्वकम की विचारधारा रखने वाले काकाजी का जनम 11 अगस्त 1920 में महाराष्ट्र के बोदवड के पास पिपलगाँव देवी में हुआ था इनके पिताजी का नाम श्री भीकमचन्दजी सदारामजी खण्डेलवाल तथा माताजी का नाम श्रीमति मोहरीदेवी खण्डेलवाल था। जब काकाजी वाल्यावस्था के थें उनके पिताजी का स्वयं के भाईयांे से मतभेद हो जाने के कारण इनके स्वामिमानी पिताजी श्री भीवमचनद ने अपनी पैतृक सम्पति को विवाद का विषय न बनाकर के तृणवत त्याग कर महाराष्ट्र अकोला में आकर बस गए।

अकोला में श्री भिकमचन्दजी एवं उनके परिवार को श्री माणिकचंदजी (सज्जन एवं गणमान्य पुरूष) ने अपना पूर्ण सहयोग मदद व स्नेह आगे बढ़ने हेतु दिया। और काकाजी और उनके अग्रज श्री शांतिलाल जी को अपने यहां नौकरी दी 1936 में काकाजी का विवाह तुमसर निवासी गीतादेवी जी के साथ सम्पन्न हुआ। सन् 1937 में काकाजी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्रिया-कापों संस्कृति व आदर्शो से प्रभावित होकर संघ में प्रवेश किया, हांलाकि संघ के प्रवेश के दौरान वह उससे पूर्णतः योगदान देने की स्थिति में नहीं थे कारण इतनी कम आयु साथ ही कोई स्थायी व्यवसाय का न होना लेकिन शीघ्र ही 1940 के प्रारंभ में ही अर्थात 20 वर्ष की अवस्था से पूर्व में संघ एवं समाज सेवा के लिए कार्य करने को सदा तत्पर रहने लगे और अपने पिता के आरंभिक व्यवसाय को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने लगें। श्री माणिकचन्द जी के अतिरिक्त श्री गुलाबचंद रामजीवनजी सारडा ने इनके व्यवसाय को प्रांरभ करने से स्यायीत्व तक अपना पूर्ण सहयोग व योगदान किया, और फिर पिता की तरह स्वाभिमानी एवं कर्तव्य निष्ठ पुत्र (काकाजी) ने व्यवसायको अपूर्व गति व उन्ति प्रदान की और शीघ्र ही अपने परिश्रम, ईमानदारी नि:स्वार्थ कर्म के कारण उच्च व्यवसायी बन गए जिससे वह अब तन और मन के साथ धन का

समर्पण कर समाज सेवा में जुट गए। उनके लिए धन का संगृह अनुचित था धन समाज कल्याण के लिए किये जानेवाले कार्यो का माध्यम मात्र था।

काकाजी का समाज कल्याण के कार्यो के प्रति रूझान किशोरावस्था में ही प्रारंभ हो गया था, संघ प्रवेश ने उस समाजसेवा को ओर अधिक गति प्रदान कर दी काकाजी द्वारा समाज हित में किए गए कार्यो को संक्षिप्त रूप में निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किया जा रहा है-

(1)अकोला में अकाल के दौरान की गई समाज सेवाः-

सन् 1958-1959 के दौरान अकोला जिले में अकाल पड़ गया, जिसके प्रभाव सम्पूर्ण अकोला जिला के साथ आस-पास के क्षेत्र पर भी पड़ रहा था, परन्तु किसान मजदूर, गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार तो जीवन यापन की अति आवश्यकताओं को पूर्ण करने में भी असमर्थ थें, ऐसे संकर के समय एक दिव्य पुरूष की भांति काकाजी ने अकाल पीड़ितो की सहायता का बीड़ा उठाया उन्होने अकाल ग्रस्त परिसरों, घरो, स्थान-स्थान जाकर अन्न, भोजन, वस्त्र, औषधियाँ व अन्य आवश्यक साम्रगी वितरित की इस कार्य में संघ के स्वयं सेवको का भी सम्पूर्ण योगदान अकाल पीड़ितो को मदद पहुचाने में रहा, इतना हीनहीं, इस समय तक काकाजी का व्यवसाय उन्नति पर था अतः स्वयं के धन का एक वड़ा भाग व अपने यहां नौकरी दिए गए व्यक्तियों को भी इस समाज सेवा में संलग्न किया। साथ ही अन्य व्यक्तियों, समुदायों, संस्थाओं को इस कार्य के लिए प्रेरित किया।

(2) शिक्षण प्रसारक मण्डल के दायित्व का निर्वहनः-

सन् 1960 में स्व. वसंतरावजी ने काकाजी की निस्वार्थ सेवा, मानवता की दृष्टिकोण से प्रभावित होकर उन्हे शिक्षण प्रसारक मण्डल का दायित्व सौंप दिया, जिसे उन्होने अपने सहकारी वृदों के साथ अथक परिश्रम, लगन से निरंतर विकास किया। और 1960 में ही इन्होने अपने पिताजी के नाम पर भिकमचन्द खण्डेलवाल विद्यालय माताजी के नाम पर मोहरी देवी खण्डेलवाल कन्य विद्यालय, पत्नि के नाम पर 1980 में गीतादेवी खण्डेलवाल फार्मसी इन्स्टिट्यूट, 1989 में खण्डेलवाल प्रायमरी विद्यालय का निर्माण करवा कर शिक्षा के क्षेत्र में अविस्मरणी कार्य किया जिसके लिए संबंधित क्षेत्र के ही नहीं भारत के न सभी क्षेत्रों के आगे उनके ऋणी रहेगें जहां जहां तक उनके विद्यार्थी पढ़ लिख कर उन्ही की तरह कार्यो की प्रेरणा लेकर समाज सेवा के साथ उच्च पदों पर कार्यरत है 1990 में खण्डेलवाल इंगलिश स्कूल की भी स्थापना की।

(3)पार्षद (वार्ड प्रतिनिधि) के रूप में सेवारतः-

अकोला में पार्षद के चुनाव (नगरपालिका में) 1970 में होना तय हुआ था इस समय तक आते आते काकाजी के समाज सेवा कार्यो की प्रशंसा, वह सराहना पूरे अकोला जिले में ही नहीं संघ के प्रति समर्पित कार्यो के कारण और निस्काम सेवा में पूरे भारत में हो रही थी उस समय जनसंघ की ओर से काकाजी को अकोला नगर पालिका से चुनाव लड़ने का टिकिट प्रदान किया गया काकाजी ने 1970 में चुनाव में उम्मीदवार के रूप खड़े हुए और अपनी समाज सेवाओं के चले यह महान जीत अकोला निवासियों के लिए एक मामूली बात थी क्योंकि वे शहर के जिस मोहल्ले से उम्मीदवार के लिए खडत्रे हुए थे केवल वह मौहल्ला ही नहीं वरन् पूर्ण अकोला उनके कार्यो के लिए उनसे प्रेरणा लेता था । इस पद को संमालते हुए भी उन्होने समाज सेवा के साथ प्रातः 6 बजे से क्षेत्र में जाकर लोगो की समस्याओं को सुनना एवं उनके निदान का पूर्ण प्रयास करना उनका देनिक कार्य बन गया था ।

(4)आयुर्वेद महाविद्यालय वं संत तुकाराम हॉस्पिटल के कार्य एवं निर्माण में योगदानः-

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा काफीसमय से प्रयास चल रहा था कि अकोला जिला में आयुर्वेद शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना की जाए। संघ की इस योजना में काकाजी का योगदान अत्यन्त सराहनीय है इस

महाविद्यालय को संचालन करने वाली राष्ट्रीय वैधक प्रसारक मण्डल का काकाजी ने आठ वर्षो तक अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला 400 बेड वाला यह हॉस्पिटल काकाजी के कार्यकाल में सुचारू रूप से चला।

केंसर (कर्करोग) का निदान उस समय एक असंभव वान थी, केंसर को नाइलाज रोग माना जाता था काकाजी की पत्नि का दुख पीड़ा काकाजी कठिनाई से सह रहे थे, और 5 जून 1978 को 4.पू. श्री गुरूजी का केंसर से कैलाशवासी हो जाना उनके लिए दुख का पहाड़ टूट पडना था, गुरूजी काकाजी के लिए भगवान के समान थे, केंसर के स्पिटल बनाने की भावना से श्री जमनालाल गोयनका इस क्षेत्र में कार्यरत थे इस कार्य में उन्होने काकाजी का सहयोग और साथ जुडने का आग्रह किया और काकाजी ने तन,मन,धन से इस कार्य में अपना सम्पूर्ण योगदान दिया। और इन दोनों के अथक प्रयास से केंसर हॉस्पिटल की स्थापना हुई।

(5)समाजकल्याण का आर्थिक पक्षः-

भारतीय स्वतंत्रता के बाद देश का आर्थिक विकास देश की प्रथम आवश्यकता थी। और किसी भी देश का विकास उसकी छोटी-छोटी- ईकाईयों से ही मिल कर बनता है महाराष्ट्र का अकोला शहर भी आर्थिक विकास की दिशा में पीछे था, शहर में उद्योगों की कमी थी और जो थे भी वह भी पुराने समय से चले आ रहे बड़े-बड़े घरानों के थे छोटे व्यापारी उद्योग लगाने के लिए पूंजी से असमर्थ थे। कच्चा माल तो भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण पर्याप्त मात्रा में था (तत्कालीन) जनसंख्या के अनुपात में परन्तु स पर आधारित उद्योग प्रारंभ करने के लिए राष्ट्रीय बैंक से अर्थसहायता (लॉन) लेने में जटिल प्रक्रिया के तहत सक्षम नहीं थे इसी कारण यहां दाल मिल और तेल कारखानों का विस्तार नहीं हुआ था।

संघ के प्रयास से अकोला के कर्मठ परिश्रमी और नि:स्वार्थ समाजसेवा एवं स्वयंसेवको के अथक प्रयास से जिनमें काकाजी प्रमुख है ने अकोला अर्बन बैंक की स्थापना की संक्षेप में बैंक की स्थापना से तक सभी पद्धति इन्ही के प्रयासों के परिणाम स्वरूप हुई और आज अकोला जिला देश का सबसे अधिक दालों और खाद्य तेलों का उद्योग केन्द्र है।

(6)भारतीय हिन्दु सभ्यता, संस्कृति के संरक्षक के रूप में काकाजी की भूमिकाः- आज भी भारत के लाखों विद्यालय (अपवाद स्वरूप उन विद्यालयों) के अतिरिक्त जो पूर्ण आंगल शिक्षा पर आधारित पाश्चात्य सभ्यता के काचैंध में स्थापित हैं में प्राथमिक (प्रायमरी) कक्षाओं के प्रारंभ में गाय पर 5 वाक्य 10 वाक्य या निबन्ध लिखने को आता है तब अंतिम पक्तियां होती है हम गाय की पूजा करते है, गाय को गौमाता कहते हैं इसी तरह विद्यालयों में किसी भी उत्सव से पूर्व गणेश पूजन किया जाता है, इसके अतिरिक्त शिक्षा दी जाती है हमें कठिनाई में पड़े लोगो गरीबो,असहायों की सहायता सेवा करनी चाहिए यह है हमारी प्राचीन भारतीय हिन्दु संस्कृती।

इसी संस्कृति में सर्वप्रथम गाय जिसका दुग्ध बच्चों के पालन पोषण में उपयोग होता है वृद्ध एवं रोगियों के लिए सुपाच्य बनकर उन्हे स्वस्थ एवं शिघ्र जीवी बनाता है उस गाय की उपेक्षा करना एक निंदनीय कार्य है।

इस संदर्भ में अति संक्षेप में काकाजी के एक बहत बड़े योगदान का भी उल्लेख करना उचित होगा कि जब गाओं के पालन पोषण के निवास (खुलामैदान नहीं ढका हुआ स्थान) की समस्या उत्पन्न हुई तब काकाजी ने अपने जन्मदिवस (1993) के अवसर पर अकोला से 13 किलोमीटर दूर वाशीम रोड पर माधव नगर म्हैसपुर फाटा में स्थित 10 (दस) एकड़ भूमि दान में दे दी। श्री गणेश उत्सव पूरे भारत में होने वाला आनन्दोत्सव है लेकिन शुरूआत महाराष्ट्र से हुई और आज तक महाराष्ट्र के लगभग सभी जिला में यह उत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है अकोला में भी यह उतसव बहुत ही भक्तिभाव एवं हर्षोल्लास से मनाया जाता है। प्राचीन भारत से ली आ रही परम्पराए प्रथाए किसी न किसी मानव कल्याण आध्यत्मिकता और समाज सेवा से जुड़ी रही है आज बदलते समय व परिस्थितियों मे भले ही उनका सामजस्य नहीं हो पा रहा है इसी तरह गणेश उत्सव महापुरूष लोकमान्य तिलक इस

समाज कल्याण (तत्कालीन समय में धातुओं के वर्तो का प्रलन हो जाने के कारण) मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कर्मार वे रोजगार हो गए थे अतः माद्रपद माह की गणेश चतुर्थी गणेश जन्मदिवस पर लोग अपने अपने घरो व्यवसायांे और बड़े रूप में गणेशजी की मूर्तियां लाकर प्रतिदिन उत्सव मनाते है और इन दो दिनों में सुविधानुसार मूर्ति का विर्सजन करते है । इस उत्सव में अकोला में काकाजी की अहम् भूमिका रहती थी काकाजी अपने जीवन के अंतिम समय तक इस कार्यक्रम में सक्रिय योगदान देते रहे एवं विर्सजन यात्रा में सम्मलित रहने के लिए अपना सम्पूर्ण समय अकोलावासियों के साथ हर्षोल्लास से व्यतीत करते थे।

निष्कर्ष:

हमारी प्राचीन संस्कृति हमें यह शिक्षा देती है कि दूसरों के दुखों कष्टों में उनके भागीदार बनकर उन्हे उस संकट से बचाए। काकाजी के कार्यद्वारा हमे ऐसा विदीत होता है की, कोई व्यक्ति समूह सामान्य जन कष्ट में है तब तुरंत वहाँ पहूँच कर उनका सहयोग करे, जैसे की, अकाल पीडितो की सहायता मोर्णा नदी में बाढ़ आ जाने पर वहाँ फंसे लोगो को निकालना उनके लिए राहत सामग्री पहूंचना जिनमें अन्न, भोजन बस्त्र एवं अन् आवश्यक सामग्री आदि ऐसे कार्यो के लिए काकाजी सदैव तन,मन और धन से तत्पर रहते थे।

कार्य के प्रति समर्पण और उसकी क्रियान्विती में शतप्रतिशत योगदान, ईमानदारी आदि अनेकानेक गुणों के भंडार काकाजी के जीवन का आधार का दर्शन होता है, जिसके लिए विदुर नीति का यह श्लोक समर्पक है-

दिवसेनैव तत् कुर्याद् येन रात्रो सुखं वसेत्।
यावज्जीवं च तत्कुर्याद् चेन प्रेत्य सुखं वसेत्।।

अर्थात दिन भर ऐसे कार्य करो, जिसे रात को सुख् चैन की नींद आ सके।। उस प्रकार जीवन पर्यन्त ऐसे कार्य करो, जिससे मृत्यु के पश्चात् सुख एवं सद्गति प्राप्त हो।

संदर्भः-

1. कूलवाल दिलीप 'संस्कार से साम्राज्य तक'
2. आदर्श गौसेवा एवं अनुसंधान प्रकल्प अकोला रजत जयंती (1993-2018 पथक्रमण)
3. शिक्षण प्रसारक मण्डल अकोला सुवर्ण पदचिन्ह लेख- आदरणीय काकाजी - एक कृतार्थ जीवन लेखिका सौ. वैशाली ज. देशपांडे
4. देवगांवकर आरती (2021संघ समर्पित काकाजी)
5. दि अकोला अर्वन, को-ऑपरेरिव्ह बैंक लि. अकोला, स्थापना 1963
6. लेख-सुवर्ण महोत्सव सरस्वतीच्या आराधनेचा- लेखक ल.त्र्यं. जोशी
7. जन्म शताब्दी समारोह (1920) में संघ के पदाधिकारियों एवं काकाजी के सुपुत्र सुपौत्र आदि द्वारा दिये गये भाषण एवं अभिव्यक्ति
8. समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ
9. खण्डेलवाल समाज के वरिष्ट एवं प्रतिस्थित मन महानुभावोंके द्वारा अभिव्यक्त विचार।